REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

द्वितीय पानीपत के युध्द मे हेमचंन्द्र (हेमू) का योगदान

डॉ. विवेकानंद लक्ष्मण चव्हाण
इतिहास विभाग , एस.पी.डी.एम.महाविद्यालय, शिरपूर , जि.धुळे (महाराष्ट्र)

प्रस्तावना :-

मुघलकालीन भारतीय इतिहास में हेमू एक ऐसा व्यक्ति था, जो विद्युत की भाँति चमका और प्रकाशमान हुआ | उसके यश और कीर्ती ने उसके समकालीन शासकों की आँखे चौंधिया दीं | वह कुछ काल तक, देश परय छाए संकटकालीन काले बादलों में रजत - रेखा की भाँति चमका किन्तु उस पर राजनीतिक ग्रहण भी अचानक और अपत्याशित रुप से लगा |[1]

इतिहास सदैव विजेताओं का होता है | विजेता शासक इतिहासकारों से सपने अनुसार इतिहास लिखवाते थे | मुघल कालीन भारतीय इतिहास की भी वही स्थिती है | तत्कालीन मुस्लिम इतिहासकारों के वर्णनों मे चाटूकारिता भरी पडी है | बाद के अंग्रेज इतिहासकारों ने मुस्लिम इतिहासकारों को आधार बनाकर राजनीति से प्रेरित होकर इस प्रकार तोड - मरोड कर प्रस्तुत किया की हिन्दु - मुस्लिम वैमनस्य पन पे | समकालीन भारतीय इतिहासकारों ने भरी उन्ही का अंधानुकरण किया | परिणाम सह हुआ की, पृथ्वीराज चव्हाण हेमचंन्द्र, महाराणा प्रताप, छ.शिवाजी महाराज, बाजीराव पेशवा, गुरु गोविंद सिंह जैसे आदर्श चरित्र साधारण या निकृष्ट बनकर प्रस्तुत हुए | इन्ही बातों को ध्यान मे रखकर प्रस्तुत शोधनिबंध में द्वितीय पानीपत के युध्द मे हेमचंन्द्र (हेमू) का योगदानयह विषय चुना है |

हेमू का जन्म विक्रम संबत 1558 मे अलवर जिले के राजगढ से तीन मील दूर माछेरी नामक ग्राम मे पुरनदास नामक ब्राह्मण व्यक्ति के घर मे हुआ |[2] वे भृगु वंश से संबंधित थे | उनके कई नाम थे | वसन्त राय, हेमराय, हिम्मतराय, हिम्मत सिंह, हेमचंन्द्र, हेमू शाह | गद्दी नशीनी के बाद नाम हेमचंन्द्र हो गया, किंन्तु लोगों ने इन्हे संक्षिप्त नाम हेमू से पुकारना शुरु किया, जो इतिहास प्रसिध्द नाम हो गया | हेमू ने पहले पाठशाला में हिंदी एवं संस्कृत की शिक्षा अलवर के प्राप्त की | सन 1506 इ 1507 ई मे हेमू 6 वर्ष के थे | शेरशाह सूरी (फरियद) से उनेकी दोस्ती थी | तिजारा मे हेमू ने मौलवी से उर्दू और फारसी की शिक्षा ग्रहण की थी | सन 1534 ई मे शेरशाह सूरी ने बिहार पर अधिकार कर लिया | उसने हेमू को अपने पास बुलवा लिया | और छ माह हेमू ने सैन्य प्रशिक्षण प्राप्त किया | शेरशाह सुरी ने उन्हे फौज में सिपहसालार नियुक्ती किया | सन 1636 ई में महमूद शाह के विरुध्द युध्द में तथा सन 1537 ई में बंगाल पर आक्रमण के समय हेमू शेरशाह सूरी के साथ था | इ.स. 1538 ई.मे शेरशाह सूरी के साथ बनारस, बहराइच, कलोज सम्भल, जौनपुर और बहराइच यह प्रदेश, कब्जा करने मे हेमू ने शेरशाह सुरी का साथ दिया | 26 जुन 1539 ई. को मुगलों के साथ हुई चौसा की लढाई में हेमू ने शेरशाह को साथ दिया था | हेमू ने शेरशाह के साथ प्रत्येक युध्द में भाग लेना शुरु किया | इ.स. 1544 में सम्राट शेरशास सुरी ने कालीपर का घेरा डाला | दुर्भाग्यवश आग का गोला उनके पास आकर फटनेसे वे जल गये | आग की लपटो मे शेरशाह सुरी की मौत हो गई | लेकिन हेमू ने कालिंजर के लिल्ले पर कब्जा कर ही लिया |[3]

सम्राट शेरशाह सुरी के मृत्यु पश्चात उनका पुत्र इस्लामशाह सम्राट बना | इस्लामशाह ने हेमू को शाही संग्रहकर्ता और फिर बाजार अधीक्षक बनाया | सन 1553 ई. मे.सम्राट इस्लामशाह की मृत्यु हुई | उसके बाद दरबारियों ने उसके पुत्र जो केवल 12 वर्ष का था, को गद्दी नशीन कर दिया | मुबारिज खाँ ने उसको मारकर 2 नवम्बर 1553 ई. को. गद्दी हासिल कर ली | उसने सुलतान मुहम्मद आदिल की उपाधि धारण की, अपने नाम को खुतबा पढवाया तथा सिक्के बनवाये | सुलतान मुहम्मद के गलत निर्णय के कारण उनके लिखाफ विद्रोह हुआ | सुलतान ने विद्रोहियों के दमन का कार्य हेमू को सोंप दिया | हेमू ने विरोधियों का दमन किया | सुलतान ने प्रसन्न होकर हेमू को वजीर-ए-आजम बना दिया | हेमू

ने 21 युध्द मे विद्रोहियों का पराभव किया था | उसके बाद हेमू ने दिल्ली की और प्रस्थान किया | मुघल सेना भयभीत होकर भाग खडी हुई | दिल्ली पर कब्जा करते ही हेमू ने अदली के पास निमन्त्रण भेजा कि वह आकर राज्य भार संभाले, लेकिन हेमू के एहसानों तले दबा होने के कारण अदली ने कुछ और सोचा | वह दिल्ली पहुँचा और उसने हेमू को अश्वमेघ यज्ञ करने की आज्ञा दी | अदली ने स्वयं हेमू को विक्रमादित्य की उपाधी से विभषित किया और उसे दिल्ली की गद्दी पर स्वयं नशीन किया |

सुलतान अदली ने हेमू के लिए एक विस्तृत साम्राज्य को छोडकर स्वयं को चुनार तक सीमित कर लिया | हेमू ने सब पदों पर नियुक्तीयों का पदच्युत करने का और न्याय - वितरण का कार्य अपने -आप सँभाल लिया | अपनी दुरदर्शिता के कारण उसने शेरशाह और सलीम खाँ के खजानों और उनकी हाथी - शालाओं, पर पूर्ण अधिकार प्राप्त कर लिया | कुछ दिनो तक उसने राये की उपाधि धारण की पत्पश्चात उसने राजा की उपाधि धारण कर ली और राजा विक्रमाजीत की पदवी अपना ली | भारतीय राजनीतिक कार्यक्षेत्र मे हेमू के स्तर का शूरवीर और राजनीतिक सहसा देदीप्यमान हुआ | जिसे समय उत्तरी भारत में चारों और अराजकता फैली हुई थी, हेमू ने शासन की बागडोर अपने हाथ मे संभाली |[4] हेमू ने अपने शासन काल में 22 युध्द में विजय हासिल की थी | 1) मुरैना का युध्द 2) किशनगढ का युध्द 3) अजमेर का युध्द 4) छिब्रामऊ का युध्द 5) सुलेमान ईमाद से युध्द 6) ख्वाजा इलियास से युध्द 7) चुनार मे युध्द 8) अहमद खाँ से युध्द 9) कालपी का प्रथम युध्द 10) कालपी का द्वितीय युध्द 11) खानवा का युध्द 12) मंदागर या मंदागढ का युध्द 13) धुपर्गटटा का युध्द 14) मुंगेर का युध्द 15) बयाना का युध्द 16) इटावा का युध्द 17) कालपी का तृतीय युध्द 18) आगरा के समीप युध्द 19) आकरा में युध्द 20) रनकता में युध्द 21) तुगलाकाबाद में युध्द 22) दिल्ली पर आक्रमण[5]दिल्ली की विजय निर्णयात्मक थी और एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि भी थी |

दिल्ली पर कब्जा हो जाने के बाद स्थिती के नियन्त्रण की आवश्यकता थी | उनका सिंहासनारोहरण 16-17 फरवरी सन 1656 ई. में हुआ | इतिहासकारों ने हेमू के उपर अरोप लगाया कि उसने सुलतान अदली के साथ गद्दारी की तथा स्वयं राजा बन बैठा, बिल्कुल बेबुनियाद है | यदी उसने ऐसा किया होता तो कम से कम अफगाण सामन्त्र पानीपत के युध्द मे उसका साथ नदी देते और वफादारी नदी निभाते | हेमू ने 17 फरवरी सन 1656 ई.से लेकर 5 नवम्बर 1656 ई.तक दिल्ली मे शासन किया |

सन 1656 ई. में हिंदुस्थान भीषण आर्थिक और राजनीतिक समस्या से ग्रस्त था | दिल्ली का सिंहासन कई प्रतिद्वन्दियो के मध्य संघर्ष का कारण बना, जिनमें से प्रमुख थे, हेमू, सिंगन्दर और अकबर | अकबर और उसके गुरु बैरम खाँ के सामने सर्वप्रथम और सबसे प्रमुख कार्य दिल्ली में पुन: अधिकार स्थापित करना और तत्पश्यात हारे हुए प्रदेशो को, जीतना था | मुघल सुभेदार तारदी बेग खाँ की हत्या बैरम खाँ ने करने के बाद अकबर के भारत मे ठहरने का निश्चय करने पर मुगलों ने हेमू से मोरचा लेने की तैयारियों आरम्भ कर दी |[6]

पानीपत का द्वितीय युध्द :-

हेमू कुछ ही दिनों के अन्दर वह युध्द के 1500 हाथियों अथाह और असंख्य खजानों और मुगलों के विरुध्द कुच करने वाली एक विशाल सेना के साथ तैयार था | मुघल सेना ऐतिहासिक रण ज्ञ क्षेत्र पानीपत की और बढी | दुसरी और हेमू ने गुण और संख में महान अपनी सशस्त्र सेना के अग्रदल को, मुबारक खाँ और बहादुर खाँ जो उसके प्रमुख आधिकारी थे | के संरक्षण में दिल्ली से वस्तुत: 30 मील की दुरी पर स्थित पानीपत की और भेज दिया और युध्द की तैयारियाँ आरम्भ कर दी | यह सेना का अग्रदल बहुत अच्छी प्रकार रक्षित नही था और संख्या में भी न्यून था | यह हेमू की भूल थी | मुघलों की और से लगभग 10 हजार सरस्त्र सेना के अग्रदल ने अली कुली खाँ उजबेग के नेतृत्व मे कूच किया | मुघलों ने हेमू की सशस्त्र सेना पर अधिकार कर लिया | अपने सशस्त्र सैन्य दल को निर्बल रक्षक के आधीन पहले ही भेज देना हेमू के लिए एक घातक भूल सिध्द हुई | हेमू सशस्त्र सेना के बन्दी हा जाने पर बिचलित नही हुआ क्योंकी वह महत्त्वपूर्ण नही थी | वह अचल रहा और पानीपत रणक्षेत्र की और पूर्ण युध्द व्यवस्था के साथ तेजी से बढा | उसकी सेना तीन भागो मे बटी थी |[7] 1) मध्यभाग - हेमू 2) दक्षिण भाग - शादी खाँ 3) राम पक्ष - रामचन्द्र (रमैया)

हेमू की सैना में 1500 युध्द के हाथि और सशस्त्र सेना के अग्रदल थे | 30,000 अभ्यासी घोडसवार थे | हेमू के आक्रमण का समाचार मुघलो का 5 नवम्बर 1556 के पहुँचा | तो मुघलो के शिवीर मे हडकंप मच गया | बैरम खाँ और अकबर, जो पानीपत से 10 कोस दूर करनाल मे थे, युध्द की निकटता का समाचार पाकर शेष मुघल सेना के साथ आगे बढे | बहुत से मुघल पराजित हो चुके थे, परंन्तु लढाई तेजी से चालु थी | उसने मुघलो को घेर कर एकत्रित किया और उपहार देकर उत्तेजित कर रणक्षेत्र की और बढने को आदेश दिया | अकबी और बैरम खाँ पानीपत से 5 कोस की दूरी पर स्थित अपने शिवीर से बाहर निकल सके उसी समय हेमू प्राणघातक दुर्घटना मे ग्रस्त होने का समाचार मिला |[8] अग्रदल के मुघल अमीरो और हेमू के बीच युध्द और हत्याकाण्ड आरम्भ हुआ | अकबर और बैरम खाँ निकट ही थे, उन्होंने युध्द में कोई भाग नही लिया | मुघलो का अग्रदल प्रमुख अली कुली खाँ के अधीन था, जिसकी पानीपत के पास हेमू से टक्कर हुई | उसने हेमू के हाथी पर आक्रमण किया | हेमू युध्द के अपने बहुत से बलशाली हाथियों पर भरोसा रखता था | हाथियों के आक्रमण ने दाएँ और बाएँ विभागों को हिला दिया | जब मुघल सेना - नायकों को विश्वास हो गया कि उनके घोडे मदमाते हाथियों की बराबरी बिलकुल नही कर सकते, तो उन्होने चक्कर काटना आरंभ कर दिया, मुघल घोडो की पीठों परसे उत्र पडे और हाथियों को घेर लेने की नीती बदल दी | ऐसे मे मुघलो ने धनुर्धारियों के एक स्वामीभक्त दल को चारों दिशाओं मे भेज दिया | जिन्होने इस युध्द में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई | हाथियों के आक्रमण से मुघल सैनिक भाग खडे हुए | उन्होने ऐसी सहनशक्ति प्रदर्षित की, कि केंद्र की और से हाथी वापस चले गए | उसके बाद मुघल सैनिक हेमू की सैनिक दल के पिछे निकल पडे और अपने तीर चलाए तथा तलवारे घुमाई| इसी समम जबकी

युध्द अपनी चरम सीमा पर था और मुघल घुटने टेकते ही वाले थे और एक निराश प्रतिरोध कर रहे थे, दुर्भाग्य का मारा हेमू हवाई नाम के हाथी पर, जो उसके सबसे अच्छे हाथियों मे से एक था, हेमू ने अपने भीषण हाथियों को एकत्रित करके हर प्रकार का रण कौशल जो, उसकी शक्तिशाही सामर्थ्य में था, और हर प्रकार का साहसिक कार्य जो उसकी विप्लवकारी आत्मा मे छिपा था, दिखाया | अबुल फजल आईन - ए - अकबरी मे लिखते हे | अचानक संघर्ष के बीज में, दैवीय कोप रुपी धुनष्य द्वारा छोडा गया तीर हेमू की आँख में लगा, और पुतली को छेदता हुआ उसके सिर के पिछे निकला | खोपडी में से उसका दिमाग बिल्कुल स्पष्टत: बाहर निकल आया, और वह मूच्छित हो गया | वह असहनीय पीडा के कारण अपने हौदे में गिर गया | हेमूने तीर को खिचा और नेत्र के छिद्र से बाहर निकल आने पर, जिसे उसने रुमाल में लपट लिया, और अपनी कष्टमय दशा के होते हुए भी उसने असम्य साहय के साथ उन थोडे से व्यक्तियों को लेकर प्रयास करते हुए जो उसके निकट रह गए थे, शेत्रु पंक्ति के बीज से वापसी बाह्य करने के लिए युध्द करता रहा | इस कारण हेमू की सेना मे भागदड मच गई और संहार और हत्याकाण्ड प्रारंभ हो गया | उसके दो धुरंदर सेनानायक शादी खाँ और भगवानदास का भी गौरवमय अन्त हुआ | हेमू के भांजे रमैया और भतीजे महिपाल भाग खडे हुए | इस महासंग्राम मे हेमू के रिश्तेदार गणेशीलाल महिपाल, श्यामचंद्र, कृष्णचंद, विष्णूचंद, हनुचंद, रविचद, बेनीनाथ, बुधनाथ, पृथ्वीनाथ आदि रणक्षेत्र में मारे गए |

हेमू के अफगान सैनिक भी देश के विभिन्न भागों में अपने गढों की और भाग निकले | जखमी के हाथी का महावत, शत्रुओं का भाला सामने देखकर प्राण जाने के भय हाथी को जहाँ शाह कुली खाँ ने निर्दिष्ट किया, वही हॉक ले जाने के लिए प्रस्तुत हो गया | हेमु को पानीपत से 5 मील दूर अकबर के शिवीर में ले जाया गया | बैरम खाँ ने स्वयं आनी तलवार हेमू के शरीर मे भोंक दी, अकबर ने अली कुली खाँ की प्रार्थना पर अपने खडग से अध्यर्पित बंदी की गर्दन को अलग कर दिया और सिर को दिल्ली के द्वारपर लटका देने का आदेश दिया | अब्दूल कादिर बदायुनी के अनुसार हेमू का वध 13 नवम्बर 1656 ई.को हुआ |[9] बदायूनी तथा अब्दुर्रहीम के विवरणो से हेमू की मृत्यु रणक्षेत्र मे हाथी के हौदे पर ही हो गई भी और वर रणक्षेत्र मे ही शहीद हो गया था | सत्य तो यह है की मृत हेमू से भी मुघल इतने भयभीत थे की वह फिर से जी न उठे अथवा उसका धड फिर से जुड न जाए, इसलिए उसके सिर का काबुल भेज दिया गया तथा धड को दिल्ली में लटकाया गया | हेमू के कुटूम्बियों न अलवर में शरण ली थी | मौलाना वीर मुहम्मद ने हेमू 80 वर्ष के पिता रायपूरनमल को फॉसी पर लटका दिया | हेमू की पत्नी अरावली की पहाहियों मे अपने मायके भहढोल में जाकर छिप गई थी |

हेमू ने अपने आठ माह के शासन में अनेक सूवों मे सूबेदार नियुक्त किए | ताकि शासन व्यवस्था चुस्त एवं दुरुस्त रहे | हेमू के समस्त सूबेदार चाहे वै हिन्दू थे अथवा अफगाण सबने, अकबर की सेना से युध्द किया और हारने पर हि अपने सूबे सौपे | हेमू के कुशल प्रबन्धन का परिणाम है |[10]

सारांश :-

मध्यकालीन हिंदूस्थान के इतिहास में हेमू अमर रह गया | उन्होने अपने कर्तव्य से सम्राट पद हासिल किया था | हिंदूस्थान में मुसलमानों का शासन होते हुए भी उन्होने हिंदू शासन निर्माण कर आदर्श प्राप्त किया है | इतिहासकारोने उनके व्यक्तित्व को उजागर कर महत्त्वपूर्ण कार्य किया है |

हेमू प्रभावशाही और आकर्षक व्यक्तिसम्पन था | उनका बहुत ही कम समय में प्रधान मंत्रीत्व प्राप्त कर लेने और भारत की तत्कालीन राजधान दिल्ली के सिंहासन पर आरुढ होने की घटना इतिहास में अद्वितीय है | वह शेरशाह के निमन्त्रण पर फौज में भरती हुआ | सेनानायक रहा | इस्लामशाह समय वे बाजार का अधीक्षक और सन 1553 ई. में मुबारिज खाँ (अदली) के शासनकाल में प्रधानमंत्रीत्व का पद प्राप्त किया था | उत्तर भारत में तीन वर्ष की अवधि तक सब मामलों की बागडोर सँभालकर वह आगे - आगे रहा | फिर वह सेनापती भी नियुक्त हुआ | इतने कम समय में उसने 22 युध्द का विजेता होने दिल्ली को जीतने तथा अन्तत: पानीपत के द्वितीय युध्द में शहीद होने का यश प्राप्त किया | उसके विपक्षी वृत्तान्तकारो द्वारा छोडे गए वर्णनो से उसके साहस और बुध्दिमानी और प्रत्येक पग पर निर्वावाद सफलता का प्रमाण मिलता है | हेमू दूरदर्शी था | वह जानता था कि शान्ति तभी स्थापीत की जा सकती थी जबकी अडियल, विरोधी अथवा विद्रोही अफगाण कुलीनों को अवरुध्द किया जा सके | उसने उन्हे नीचा दिखाने उन्हे शिकार बनाने तथा बंगाल की सीमाओं तक उनका पीछा करने में संकोच नही किया | मुघल सम्राट बाबर, सम्राट शेरशाह सुरी एवं सम्राट अकबर के कार्यो के सूरी एवं सम्राट अकबर के कार्यो की दर्प युक्त वर्णनो के कारण हेमू की कीर्ती और सफलता छिप गई | उसकी पराजय आकस्मिक थी और अकबर की विजय दैवी थी | यह सच है कि यदी यह दुर्घटना न हुई होती, तो मुघल निश्चित पराजित हुए बिना नही रह सकते थे | हेमू के शहीद होने से भारत में मुघलो की प्रभुता स्थापीत होते और अकबर के महानता से शिखर पर पहुँचने के लिए मार्ग खुल गया | जो कुछ भी हुआ या होता, यह सत्य है की हेमू ने एक गौरवमय जीवन व्यतीत किया और उसका संक्षिप्त लेकिन घटनापूर्ण सैनिक जीवन संसार के इतिहास में सदैव स्मरणीय रहेगा |

संदर्भ सूची :-

1) राघवेन्द्र प्रताप सिंह - हेमचन्द्र हेमू : एक ऐतिहासिक अध्ययन पी.एच.डी. शोध प्रबन्ध वीर बहादूरसिंह पूर्वाचल विश्व विद्यालय, जौनपूर सन 2006 पृ.11
2) डॉ.मनहर गोपाल भार्गव, विक्रमादितय सम्राट हेमचन्द्र भर्गाव हेमू :-भृ गु वंशावली, स्मरिका, लखनऊ, दिसम्बर 1976, पृ.61-64

3) उपरोक्त पृ. 61-64
4) डॉ.मोतीलाल भार्गव, हेमू और उनका युग भारती प्रकाशन मंदिर, लखनऊ, 1960, पृ. 39
5) डॉ.मनहर गोपाळ भार्गव, विक्रमादित्य, सम्राट हेमचन्द्र भार्गव, हेमू स्मरिका, जयपूर, 1968, पृ.7
6) उपरोक्त पृ.57
7) एच.बेवरीगे - अकबरनामा (अबुल फजल लिखित) (अनुवाद), 1596 भाग II पृ. 59
8) उपरोक्त पृ. 62
9) अब्दुल कादिर बदायुनी - मुंतखब - उत - तवारिख (इंग्रजी अनुवाद) (लोवे एवं हैंग) पृ. 60
10) डॉ.आर.पी.त्रिपाठी, मुधल साम्राज्य का अध्यान व पतन, सुरजीत पब्लिकेशन,नई दिल्ली, पृ. 241

डॉ. विवेकानंद लक्ष्मण चव्हाण
इतिहास विभाग , एस.पी.डी.एम.महाविद्यालय, शिरपूर , जि.धुळे (महाराष्ट्र).